02.05.2020

राजनीतिशास्त्र - बी॰ए॰ प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)

अब्दुल कैश
सहा॰ प्राध्या॰ राजनीतिशास्त्र
शेरशाह महाविद्यालय
सासाराम

बहुलवाद (Pluralism)

सम्प्रभुता के एकलवादी सिद्धांत की प्रतिक्रिया स्वरूप बहुलवाद का जन्म हुआ। इसके प्रतिपादक गियर्के तथा मेटलैंड हैं। सम्प्रभुता की एकलवादी अवधारणा इस मान्यता में विश्वास रखती है सम्प्रभु शक्ति केन्द्रित और एकीकृत होती है जिसका प्रकटीकरण राज्य द्वारा होता है, इसी मत का खण्डन करते हुए बहुलवाद इस मान्यता पर बल देता है कि सम्प्रभुता विभाजित होती है और इसे विभाजित होना चाहिए। यह विचारधारा अपने तर्क में कहती है कि मनुष्य कि विभिन्न आकांक्षाएं होती हैं जो विभिन्न क्षेत्रों यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक से संबद्ध होती हैं तथा इनकी पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के संवास या संगठन होते हैं। राज्य इन विभिन्न संवासों में से एक संवास है जो मनुष्य की राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है बाकि सभी संवास इस दृष्टि से उतने ही महत्वपूर्ण है जितना की राज्य अतः केवल राज्य सम्पूर्ण सम्प्रभुता का एकल दावा प्रस्तुत नहीं कर सकता है। बहुलवाद से संबंधित विचारकों की एक लंबी श्रृंखला है जिसमे - मेटलैंड, गियर्के, फिजिस, बार्कर, लिंडसे, पाल वंकोर तथा हेराल्ड जे॰ लास्की का नाम प्रमुख है।

बहुलवादी सिद्धांत का निरूपण तथा अन्य संवास:→ सम्प्रभुत के अद्वैतवादी सिद्धांत से संबंधित विचारक राज्य को अन्य संवासों की तुलना में उच्च स्थिति प्रदान करते हैं। उदाहरण स्वरूप थामस हॉब्स का कहना है कि "संवास ऐसे उदर कीटों की भांति है जो राज्य रूपी मनुष्य के उदर में होते हैं।" बहुलवादी यह तर्क देते हैं कि राज्यों में निहित संवासों की तुलना में राज्य उच्च स्थिति कैसे रख सकता है जब कुछ संवास राज्य से भी प्राचीन हैं। इनका दूसरा तर्क यह है कि विधि निर्माण का एकाधिकार केवल राज्य के पास नहीं है अन्य ऐसे प्राचीन संवास हैं जो अपने प्राचीन विधि-विधान से संचालित होते रहे हैं।

संवासों के संबंध में बहुलवादी सर्वप्रथम मानव प्रकृति से आरंभ करते हैं वे मानते हैं कि मानव जीवन विविधता से परिपूर्ण तथा जटिल है।

Scanned with CamScanner

विभिन्न संवासों की सहायता से वह अपने जीवन के विभिन्न आयामों को पूर्णता प्रदान कर अपने आप को सम्पूर्ण बनाता है। अगर ऐसी परिस्थिति में हम अगर राज्य को ही सर्वेसर्वा मान लेंगे तो मनुष्य के केवल राजनीतिक पक्ष का ही पोषण होगा तथा अन्य पक्ष जो उतने ही महत्वपूर्ण हैं अधूरे रह जाएंगे। इसलिए अन्य संवासों का भी उतना ही महत्व है जितना कि राज्य का।

अद्वैतवादीयों का एक तर्क यह भी है कि राज्य विभिन्न संवासों/संगठनों का निर्माण करता है जो व्यक्ति के जीवन को उन्नत बनाने का कार्य करते हैं। ये सभी संवास/संगठन राज्य से शक्तियां प्राप्त करते हैं तथा इनका अस्तित्व राज्य कि इच्छा पर निर्भर करता है। यह बिल्कुल सत्य है कि राज्य द्वारा विभिन्न संगठनों का निर्माण किया जाता है लेकिन अनेक ऐसे भी संवास होते हैं जो राज्य से प्राचीन हैं तथा इनके निर्माण में राज्य की कोई भूमिका नही होती है ऐसे में संवासों के संबंध में अद्वैतवादियों की यह धारणा भी खण्डित हो जाती है।

बहुलवाद की आलोचना :⇒ बहुलवाद की पहली आलोचना तो सर्वप्रथम उनके सम्प्रभुता के विचार को लेकर होती है। वे सम्प्रभुता को इतना अधिक विभाजित कर देना चाहते हैं कि उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। इस प्रकार बहुलवाद का सिद्धांत अराजकता का सिद्धांत बन जाता है। दूसरे अगर सभी संगठनों या संवासों को एक समान मान लिया जाएगा तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी तथा नियंत्रणकारी शक्ति का लोप हो जाएगा। बहुलवादियों का तीसरा तर्क अन्तर्राष्ट्रीयता को लेकर है जो उचित नहीं है क्योंकि अगर ऐसा लक्ष्य प्राप्त हो भी जाए तो वह सम्प्रभुता की रूपरेखा मे ही स्थिर किया जाएगा।

महत्व :⇒ यद्यपि कि बहुलवाद का सिद्धांत आंशिक रूप से असंगत तथा आंशिक रूप से अराजकतावादी है लेकिन इसने राज्य के समक्ष न केवल विभिन्न संवासों के महत्व को रेखांकित बल्कि उन्हें राज्य के समकक्ष माना। इसने सम्प्रभुता के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार को स्पष्ट करते हुए इसे एक विशुद्ध वैधानिक वस्तु बताया। बहुलवाद ने अन्तर्राष्ट्रीय विधि तथा संगठन के विचारों पर विशेष बल दिया।

Scanned with CamScanner